ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 25 मई 2025

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 25 मई 2025 से 31 मई 2025

ज्येष्ठ कृ. 13 ● वि० सं०-2081 ● वर्ष 66, अंक 21, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 201 ● सृष्टि-संवत् 1,97,29,49,125 ● पृ.सं. 1-12 ● मूल्य - 5/- रू. ● वार्षिक शु. 300/- रू.

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा ओड़िशा के तत्त्वावधान में

डी.ए.वी. कटक में तीन दिन तक चला 'भक्ति-प्रवाह' कार्यक्रम

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सी.डी.ए. कटक में एक त्रिदिवसीय वैदिक समारोह का आयोजन 'भक्ति प्रवाह' के नाम से आयोजित किया गया। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा ओडिशा के तत्त्वावधान में सम्पन्न इस कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों, शिक्षकों अभिभावकों में वैदिक विचारों का प्रचार एवं आस्तिकता की भावना को प्रबल करना था।

कार्यक्रम का शुभारंभ आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा के प्रधान, डॉ. केशव चन्द्र सत्यथी, मंत्री एवं डी.ए.वी. कटक की प्राचार्या श्रीमती नमिता मोहन्ती, सभापति डॉ. ओंकार नाथ मोहन्ती एवं डी.ए.वी. की सहायक क्षेत्राधिकारी डॉ. सुजाता साहू ने वैदिक मंत्रों के मधुर ध्वनि तरंगों में दीप प्रज्ज्वलित कर किया। उपसभा प्रधान ने आयोजन की कल्पना को एक सार्थक कदम बताते हुए आर्यसमाज और डी.ए.वी. के समाज और राष्ट्रहित किए कार्यों का परिचय दिया और कहा कि ऐसे आयोजनों से समाज में शान्ति और मानव कल्याण की भावना को बल मिलता है।

तीनों दिन कार्यक्रम संध्या समय आयोजित हुआ जिसमें पहले ओड़िशा के डी.ए.वी. विद्यालयों में कार्यरत संगीत अध्यापकों ने मधुर भजनों की

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

डी.ए.वी. कॉलेज नकोदर में 'रक्तदान शिविर' का आयोजन

के.आर.एम. डी.ए.वी. कॉलेज नकोदर में आर्य युवा समाज नकोदर के द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के दौरान 21 पंजाब बटालियन एन.सी.सी. कपूरथला के एडम ऑफिसर लेफ्टिनेंट कर्नल सुरिंदर पाल सिंह ने विशेष तौर पर शिरकत की और रक्तदान कर शिविर का उद्घाटन किया।

इस शिविर में कॉलेज के स्टाफ, छात्रों व अन्य लोगों ने रक्तदान किया। चिंतन के संरक्षण व संवर्धन समाजिक के साथ-साथ समाजिक विषमताओं के समूह अन्मूलन के लिए क्रियाशील है। 70 बार स्वयं खूनदान कर चुके स्टार ब्लड डोनर प्रिंसीपल डा. अनूप कुमार ने कहा कि युवाओं को इस पुण्य कार्य में योगदान डालना चाहिए तांकि रक्त की कमी को पूरा किया जा सके और किसी भी आपात स्थिति में व्यक्ति का जीवन बचाया जा सके।

ब्लड बैंक की टीम ने रक्तदाताओं

जिसके फलस्वरूप 27 यूनिट रक्त एकत्र हुआ।

प्रिंसीपल डॉ. अनूप कुमार ने उपस्थितजनों को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री योगी सूरी जी के नेतृत्व में आर्य युवा समाज वैदिक को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। कालेज के एन.एस.एस., एन.सी.सी. यूनिट, रेड रिबन क्लब, सिविल अस्पताल नकोदर की ब्लड बैंक टीम और टीम यंगस्टर डोनर्स ने विशेष सहयोग दिया।

डी.ए.वी. विद्यालय नारायणगढ़ में नए सत्र में 51 कुण्डीय हवन

डी.ए.वी. पब्लिक (सी.सै.) विद्यालय नारायणगढ़ में नए सत्र (2025-26) में वर्ष के आरम्भ में 51 कुण्डीय हवन किया गया। स्कूल प्रधानाचार्य डॉ. आर .पी .राठी की अध्यक्षता तथा श्री चंद्रपाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में छात्रों और अध्यापकों ने आहुतियाँ डाली।

डॉक्टर विवेक कोहली (पूर्व प्राचार्य ,सोहनलाल कॉलेज, अंबाला) ने मुख्य वक्ता के रूप में विद्यार्थियों को संबोधित किया। इस अवसर पर स्थानीय कमेटी के सदस्य एवं आर्य समाज के सदस्य विशेष रूप से उपस्थित रहे।

हवन का प्रारंभ वैदिक मंत्रोच्चारण द्वारा किया गया। सभी विद्यार्थियों ने सकारात्मक और शांतचित्त होकर हवन में मंत्रोच्चारण के साथ आहुतियां डाली। प्राचार्य राठी ने विद्यार्थियों को गायत्री मंत्र का महत्व बताते हुए कहा कि डीएवी विद्यालय में शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। उन्होंने विद्यार्थियों को जीवन में सफलता के साथ-साथ सशक्त चरित्र -निर्माण पर बल देते हुए कहा कि इस हवन से मन शुद्ध होता है और मंत्रों के उच्चारण से बच्चों की स्मरण शक्ति तीव्र होती है। उन्होंने विद्यार्थियों के नए सत्र में उनकी लक्ष्य प्राप्ति के लिए कामना की। आगंतुक चंद्रपाल शास्त्री जी ने विद्यार्थियों को नए सत्र की शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने विद्यार्थियों को आदर्श जीवन आत्मसात करने के लिए संकल्प भी दिलवाया।

डॉक्टर विवेक कोहली ने विद्यार्थियों को नए सत्र की शुभकामनाएँ दी।

जो सब जगत् के पदार्थों को संयुक्त करता और सब विद्वानों का पूज्य है और ब्रह्मा से लेके सब ऋषि मुनियों का पूज्य था, है और होगा, इससे उस परमात्मा का नाम **'यज्ञ'** है। क्योंकि वह सर्वत्र व्यापक है। स. प्र. समु. १

{संपादक - पूनम सूरी}

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 25 मई 2025 से 31 मई 2025

त्रिविध पवित्रता

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

पऋतस्य गोपा न दभाय सुक्रतुः, त्रीष पवित्रा हृद्यन्तरा दधे।
विद्वान्त्स विश्वा भुवनाभि पश्यति, अवाजुष्टान् विध्यति कर्ते अव्रतान्।।

ऋग् ९.७३.८

ऋषिः **पवित्रः आङ्गिरसः** । देवता **पवमानः सोमः** । छन्दः **जगती** ।

● (**ऋतस्य**) सत्य का, (**गोपाः**) रक्षक, (**सुक्रतुः**) शुभ प्रज्ञानों और शुभ कर्मों वाला (सोम प्रभु), (**दभाय न**) हिंसा या उपेक्षा किये जाने योग्य नहीं है।, (**सः**) वह, (**हृदि अन्तः**) हृदय के अंदर, (**त्री पवित्रा**) तीन पवित्रों को–विचार, वचन और कर्म की पवित्रताओं को, (**आ दधे**) स्थापित करता है।, (**विद्वान्**) विद्वान्, (**सः**) वह, (**विश्वा**) समस्त, (**भुवना**) भूतों को, (**अभि पश्यति**) देखता है, (**अजुष्टान्**) अप्रिय, (**अव्रतान्**) व्रत–हीनों को, (**कर्ते**) अंध कूप में, (**विध्यति**) धकेलता है।

● 'सोम' रमात्मा 'ऋत' का संरक्षक और अनृत का घर्षक है। जहाँ भी वह सत्य को पाता है, उसे प्रश्रय देता है। वह 'सुक्रतु' है, शुभ प्रज्ञानों, शुभ विचारों, शुभ संकल्पों और शुभ कर्मों से युक्त है और अपने सम्पर्क में आनेवाले मानवों को भी वैसा ही बनाना चाहता है। परन्तु मानव को सत्य पथ का पथिक तथा 'सुक्रतु' वह तभी बना सकता है, जब मानव उसकी शरण में जाए, उसे आत्म–समर्पण करे, उसे अपने हृदय–मन्दिर में उपास्य देव के रूप में प्रतिष्ठित करे। यदि मानव जीवन में उसकी हिंसा या उपेक्षा ही करता रहेगा, तो उससे मिलनेवाली 'सत्य' और 'शुभक्रतु' की प्रेरणा से वह वंचित ही रहेगा। अतः 'पावनकर्ता' सोमप्रभु किसी से कभी भी उपेक्षणीय नहीं है।

'सोम' प्रभु जब अपने उपासक को पवित्र करना चाहता है, तब उसके हृदय में तीन 'पवित्रों' को स्थापित कर देता है। वे तीन हैं विचार की पवित्रता, वाणी की पवित्रता और कर्म की पवित्रता। मनुष्य के विचार ही वाणी और कर्म के रूप में प्रतिफलित हुआ करते हैं, अतः वाणी और कर्मों को पवित्र बनाने के लिए सर्वप्रथम विचारों की पवित्रता आवश्यक है। यदि किसी मनुष्य के विचार अपवित्र हैं, मन में वह पाप–चिंतना करता रहता है, तो वाणी या कर्म से पाप न भी करे, तो भी वेद–शास्त्र उसे पापी कहते हैं। अतः प्रभु प्रथम अपने कृपापात्र मनुष्य से मन को पवित्र करता है, फिर उस पवित्रता को क्रमशः वाणी और कर्म में भी प्रतिमूर्त कर देता है। 'सोम प्रभु' विद्वान् है, वह प्रत्येक प्राणी की गतिविधि को सूक्ष्मता के साथ देखता है। उसकी आँख से कुछ भी नहीं छिपता। अपनी विवेक–चक्षु से साधु और असाधु की पहचान कर लेता है। साधुओं को सत्कर्म में प्रोत्साहित करता है। जो व्रतहीन हैं, किसी भी शुभ–कर्म के संकल्प से रहित हैं, अतएव जो दुर्वृत्त, अप्रिय और असेव्य हैं, उन्हें दुर्गति के अन्धकूप में धकेलता है, दण्डित करता है। आओ, हम 'पवमान सोम' को अपने जीवन की पतवार सौंपकर मन, वचन और कर्म से पवित्र बनें।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

तत्त्वज्ञान

● महात्मा आनन्द स्वामी

स्वामी जी रामायण योगवासिष्ठ से उद्धरण देकर राम की व्यथा कथा के माध्यम से यह स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे थे कि सांसारिक भोग पदार्थों से जब तक वैराग्य नहीं हो जाता तब तक तत्त्वज्ञान को समझने की बुद्धि पैदा नहीं होती। राम की यह व्यथा एक सम्पन्न, राजकुल में जन्में पले–बढ़े विद्यावान् विचारशील व्यक्ति की व्यथा है, जो संसार के वैभव पदार्थों में भटकते मानव मन को देख उत्पन्न होती है।

इस व्यथा के प्रसंग में लक्ष्मी, चिन्ता का वर्णन कर धन–सम्पत्ति की वृद्धि के परिणाम, आयु की अल्पता, अहंकार के दुष्परिणाम, तृष्णा के खेल का वर्णनकर मानव शरीर के प्रति उत्पन्न अपनी उकताहट प्रकट करते हैं।

मानव देह की बाल्य, यौवन और वृद्ध अवस्थाओं का दुःख सुनाकर स्वामी जी ने कालगति की बात कही और सांक्षारी लोगों की दयनीय अवस्था पर चर्चा आरम्भ की और कहा बुद्धि ने मानव अन्तःकरण की व्याकुल कर दिया है। राग रूपी रोग दिन–ब–दिन बढ़ता जा रहा है, वैराग्य का कहीं पता नहीं।

..... अब आगे

रजोगुणहता दृष्टिस्तमः संपरिवर्धते।
न चाऽधिगम्यते सत्त्वं सत्त्वमत्यन्तदूरतः।। 16।।

स्थितिरस्थिरतां याता मृत्युरागमनोन्मुखी।
धृतिर्वैधुर्यमायाता रतिर्नित्यमवस्तुनि।। 17।।

'आत्म–दर्शन–शक्ति रजोगुण से नष्ट हो गई है, तमोगुण बढ़ रहा है, सत्त्वगुण का कहीं पता नहीं एवं तत्त्व–पदार्थ अत्यन्त दूर है।। 16।। जीवन अत्यन्त अस्थिर है। मृत्यु आने के लिए तैयार ही है। धैर्य का सर्वथा विनाश हो गया है, फिर भी लोगों का तुच्छ विषयों में अनुराग नित्य बढ़ता जा रहा है'।। 17।।

यत्नेन याति युवता दूरे सज्जनसङ्गतिः।
गतिर्न विद्यते काचित्क्वचिन्नोदेति सत्यता।। 18।।

'दिन–प्रतिदिन जवानी प्रयत्नपूर्वक भाग रही है। सत्सङ्गति का कहीं पता नहीं है। जिससे दुःख से छुटकारा प्राप्त हो जाय ऐसी कोई गति नहीं और सत्यता का उदय तो किसी में भी नहीं दिखाई देता'।। 16।।

मनो विमुह्यतीवान्तर्मुदिता दूरतां गता।
नोज्ज्वला करुणोदेती दूरादायाति नीचता।। 20।।

'अन्तःकरण मोहजाल से अत्यन्त आच्छन्न–सा हो गया है। दूसरे को सुखी देखकर होनेवाले सन्तोष का कहीं पता नहीं है। उज्ज्वल करुणा का उदय कहीं नहीं होता और नीचता न मालूम कहाँ से चली आ रही है'।। 20।।

सर्व एव नरा मोहाद् दुराशापाशपाशिनः।
दोषगुल्मकसारंगा विशीर्णा जन्मजंगले।। 41।।

'दोषरूपी झाड़ियों में स्थित मृगों या पक्षियों के तुल्य सभी मनुष्य अज्ञान में दुराशारूपी जाल में बँधकर जन्मरूपी जंगल में विनष्ट हो गए हैं'।। 41।।

अद्योत्सवोऽयमृतुरेष तथेह यात्रा,
ते बान्धवः सुखमिदं सविशेषभोगम्।। 42।।
इत्थं मुधैव कलयन्सुविकल्पजाल,
मालोलपेलवम तिर्गलतीह लोकः।। 43।।

'आज उत्सव है, यह सुहावनी ऋतु है, इसमें यात्रा करनी चाहिए, ये हमारे बान्धव हैं, विशिष्ट भोगों से युक्त यह सुख है–यों वृथा ही संकल्प–विकल्प करते हुए इस संसार में चंचल और मृदु बुद्धिवाले लोग नष्ट हो जाते हैं'।। 43।।

बाल्ये गते कल्पितकेलिलोले
मनोमृगे दारदरीषु जीर्णे।
शरीरके जर्जरतां प्रयाते
विदूयते केवलमेव लोकः।।

सर्ग 27।।

'बाल्य अवस्था विविध प्रकार से कल्पित क्रीड़ा – कौतुक में ही बीत जाती है (उसमें चित्त की स्थिरता का लेश भी नहीं रहता)। तदुपरान्त यौवन पदार्पण करता है। यौवन में चित्तरूपी मृग दारा–रूपी गुफाओं ही में जीर्ण हो जाता है, तब भी शान्ति नहीं और वृद्धावस्था में शरीर जीर्ण–शीर्ण हो ही जाता है (उसमें भी शान्ति नहीं)। यों पुरुषार्थ–साधन से शून्य अतएव व्यर्थं आयु के यापन से मनुष्यों को दुःख ही दुःख प्राप्त होता है (सुख–शान्ति का कहीं लेश भी नहीं)'।। 27।।

अनित्यश्चाऽसुखो लोकतृष्णा तात दुरुद्वहा।
चापलोपहतं चेतः कथं यास्यामि निर्वृतिम्।। 7।।

'यह संसार सुखरहित और विनाशी है। तृष्णा (विषय–वासना) बड़ी तीव्र है और चित्त की चंचलता की कोई सीमा

☞ पृष्ठ 01 का शेष

डी.ए.वी. कटक में ...

प्रस्तुतियाँ देकर आध्यात्मिक वातावरण का सृजन किया। भजनों के उपरान्त तीन भिन्न–भिन्न विषयों पर आमंत्रित विद्वान–संन्यासियों ने अपने उद्बोधनों से उपस्थिति का मार्गदर्शन किया।

प्रथम दिवस भजनों के बाद डॉ. कृष्ण सारंगी ने माता, पिता और गुरु की बच्चों के निर्माण में भूमिका को रेखाकित करते हुए उनके कर्त्तव्यों पर प्रकाश डाला। वेदान्त गुरुकुल से आए भगवतानन्द सरस्वती ने छात्रों के चरित्र निर्माण, व्यवहार और उत्तम संस्कारों पर चर्चा की।

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. सुदर्शन देव आचार्य ने, ऋषि दायनन्द एवं महात्मा हंसराज जी के जीवन, कार्यों और चारित्रिक गुणों की चर्चा करते हुए वैदिक विचारों पर आधारित शिक्षा और राष्ट्रीयता के मूल्यों की व्याख्या की। उन्होंने गुरुमंत्र गायत्री के जाप से होने वाले लाभों की चर्चा की।

उपसभा मंत्री श्रीमती नमिता मोहन्ती ने कार्यक्रम के सफल बनाने में उपसभा प्रधान डॉ. सत्यथी सहित छात्रों, अध्यायक, अध्यापिकाओं, अभिभावकों और गणमान्य अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया और बच्चों को इस आयोजन में बताए जीवन मूल्यों को धारण करने की प्रेरणा दी। शान्ति पाठ से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

आर्यसमाज मॉडल टाउन जालन्धर में 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का आह्वान

आर्य समाज मंदिर मॉडल टाउन जालंधर के साप्ताहिक सत्संग में संसार को आर्य बनाने का आह्वन किया गया। पंडित सत्य प्रकाश शास्त्री एवं पंडित बुद्धदेव वेदालंकार के ब्रह्मत्व में यज्ञ करवाया गया। श्रीमती पूनम सेठी अपने जन्म दिवस के अवसर पर पति श्री राजेश सेठी जी के साथ मुख्य यजमान बनीं। पंडित सुरेंद्र आर्य जी ने बहुत ही प्रेरणादायक प्रभु भक्ति के दो भजन प्रस्तुत किए।

पंडित सत्य प्रकाश शास्त्री जी ने अपने प्रवचन में कहा जब तक वैदिक शिक्षाओं को अपनी आचरण में लाकर मनुष्य आर्य नहीं बनता, तब तक संसार से ईर्ष्या, द्वेष और अशांति क्षोभ का विनाश कठिन ही नहीं असंभव है।

वेद का सर्वप्रथम उपदेश है कि हम विचार पूर्वक अपने और संसार के कल्याण के मार्ग पर चलें। हिंदू, मुसलमान, ईसाई न बनकर मनुष्य बनें।

पंडित जी ने कहा कि हम सभी अपने लिए और मानवता के लिए सोचें, तभी संसार का कल्याण हो सकता है एवं राम–राज्य, आर्य राज्य बन सकता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए समाज के यशस्वी प्रधान श्री अरविंद घई जी ने कहा–महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने कहा कि हम सभी आर्य बनें, वेद भी कहते हैं आर्य बनो! उन्होंने कहा 1. आर्य परिवारों में ही अपने बेटियों का विवाह करें। 2. धार्मिक परिवारों में अपना संबंध बनाएं। 3. कुछ परिवारों में पश्चिमी विचारधारा के व्यक्ति होते हैं, उनसे सोच समझकर अपनी बेटी का विवाह करें। तभी यह संसार आर्य बन सकता है।

यह हमारे अपने अच्छे कर्म का फल है कि हम इस देश पर जन्मे हैं एवं सुरक्षित हैं। हमें अपने आप पर गर्व करनी चाहिए।

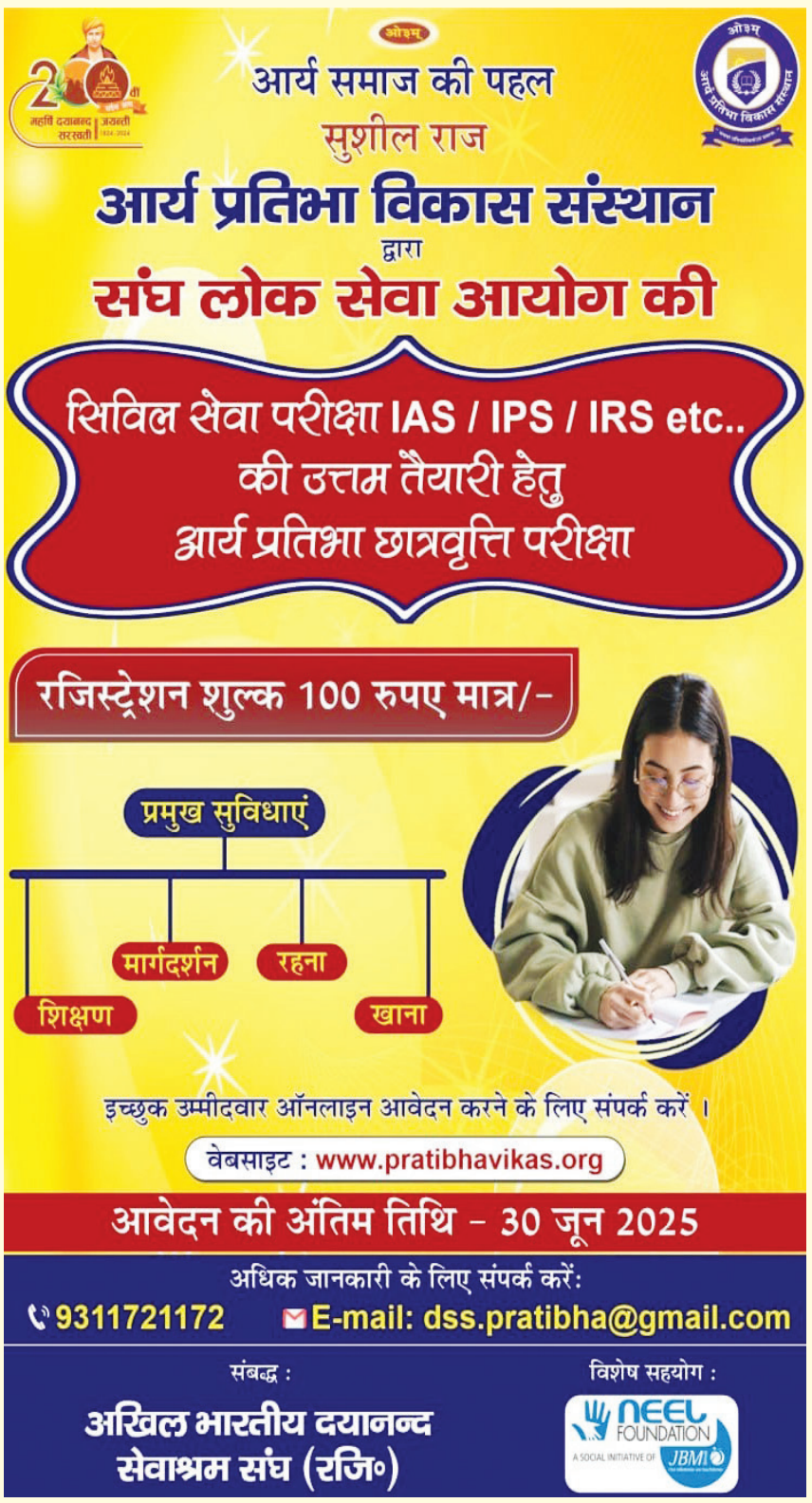

आर्य समाज मानव सेवा के 150 स्वर्णिम वर्ष 1875 - 2025

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2024-25-26
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2024-25-26
Posted at L.P.C.(Delhi RMS)D110006 ON Wednesday & Thursday, 2025

डी.ए.वी. पक्खोवाल रोड लुधियाना ने मानव सेवा कर उज्ज्वल परीक्षा परिणाम का मनाया जश्न

आज के विद्यार्थी ही कल के नेता होते हैं – यह अभिकथन एक बार फिर चरितार्थ हुआ जब डीएवी पब्लिक स्कूल, पक्खोवाल रोड, लुधियाना में सीबीएसई परीक्षा के उत्कृष्ट परिणामों ने विद्यालय में एक उत्सव का माहौल बना दिया। प्रधानाचार्या ने विद्यार्थियों को बधाई दी और उन्हें प्रेरित किया कि वे अपनी उपलब्धियों की खुशी जरूरतमंदों के लिए खाद्य सामग्री, वस्त्र और दैनिक उपयोग की वस्तुएँ एकत्रित करके मानव सेवा से मनाए।

डीएवी पक्खोवाल विद्यालय की आर्य युवा समाज इकाई के स्वयंसेवकों

ने जरूरतमंदों के लिए सहायता हेतु ***'मनुखां दी सेवा'*** नामक संस्था को राशन, वस्त्र, दैनिक उपयोग की वस्तुएँ आदि दान में दीं।

विद्यालय के उपाध्यक्ष, माननीय डॉ. एस. एस. जौहल जी – जो स्वयं एक महान परोपकारी और निस्वार्थ सेवक हैं– ने इस पुण्य कार्य के लिए डीएवी पक्खोवाल परिवार को आशीर्वाद दिया। उन्होंने इस अभियान के नेताओं की सराहना की और कहा कि उन्होंने शिक्षा के साथ–साथ जीवन मूल्यों को भी आत्मसात किया। प्रधानाचार्या डॉ. सतवंत कौर भुल्लर जी ने विद्यालय के प्रेरणास्त्रोत पद्मश्री सम्मानित माननीय डॉ. पूनम सूरी जी तथा डॉ. एस. एस. जौहल जी का सतत मार्गदर्शन और प्रेरणा के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि छात्रों को अपने विद्यार्थी जीवन में ही समाज के प्रति अपने सामाजिक और नैतिक उत्तरदायित्व को समझना चाहिए।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर 14 फरीदाबाद में स्वास्थ्य एवं रक्तदान शिविर का आयोजन

डी.ए.वी पब्लिक स्कूल सैक्टर 14 फरीदाबाद में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा के तत्वावधान से वैदिक संस्कार पखवाड़ा के अंतर्गत 'रक्तदान शिविर' का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर थैलेसीमिया एवं मैमोग्राफी संबंधित जांच शिविर भी लगाया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन प्रातः 8:30 बजे प्रधानाचार्या श्रीमती अनीता गौतम

जी के नेतृत्व में किया गया। इस अवसर पर अभिभावकगण, शिक्षकगण, शहर के समाजसेवियों ने रक्तदान करके जीवन की महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। रक्तदान शिविर में 111 यूनिट रक्तदान हुआ। स्वास्थ्य शिविर में 22 लोगों ने मैमोग्राफी द्वारा स्वास्थ्य जांच करवाई।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर 14, फरीदाबाद की प्रधानाचार्या 'श्रीमती अनीता गौतम जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि रक्तदान किसी एक व्यक्ति की जान ही नहीं बचाता, बल्कि उसके परिवार से जुड़े व्यक्तियों पर भी उपकार करता है। 'युवा वर्ग' का इस दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। हमें भविष्य में भी इस दिशा में कार्य करने चाहिएँ। वास्तव में रक्तदान महादान है। उन्होंने कहा विद्यालय में रक्तदान शिविर के आयोजन का मुख्य उद्देश्य छात्रों में मानवीय एवं राष्ट्रीय भावना विकसित करना है।

शिविर को लेकर बच्चों में उत्साह और उल्लास नज़र आया।

आर्य समाज पटियाला में हुआ आर्य सम्मलेन

आर्य समाज मंदिर आर्य समाज चौक पटियाला में निरन्तर चल रहे आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के अवसर पर आर्य महासम्मेलन पूर्ण

हुआ। इस कार्यक्रम में अनेक गणमान्य लोग उपस्थित हुए। पं गजेंद्र शास्त्री ने चतुर्वेद शतकम के मंत्रों के साथ यज्ञ पूर्ण कराया। डॉ. संजय सिंगला–नमन सिंगला, सरिता आर्या जी–श्री बिजेंद्रशास्त्री, प्रि निखिल रंजन शास्त्री जी – श्रीमती भवानी देवी जी, माननीय प्रधान राजकुमार सिंगला जी–माताश्री प्रेमलता सिंगला जी ने बहुत सुन्दर एवं श्रद्धापूर्वक यज्ञ किया। सुमन वेदिका ने वेद के पवित्र मंत्रों का पाठ किया।

इस अवसर पर आचार्य जयवीर वैदिक ने कहा कि परमात्मा ने यह भूमि आर्य अर्थात श्रेष्ठ लोगों के लिए दी है! आचार्य नन्द किशोर जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि गुरुकुल की पठन पाठन व्यवस्था सनातन है। सभी लोग वेद पढ कर अपना और दूसरों का कल्याण किया करते थे। डॉ. जगदीश शास्त्री ने कहा कि पर्यावरण शुद्ध करने के लिए हमें यज्ञ करना चाहिए। अग्निहोत्र का प्रचलन जब तक भारत देश में था तब तक हमारे देश में समय पर वर्षा होती थी और चारों तरफ खुशहाली थी। स्वामी वेद प्रकाश सरस्वती जी ने कहा कि हम आज आश्रम व्यवस्था को धीरे–धीरे समाप्त कर रहे हैं। संसार में सतुलन बनाने के लिए हमें चारों आश्रमों का पालन करना चाहिए।

कार्यक्रम का संचालन बिजेंद्र शास्त्री जी ने किया। इस अवसर पर सरहिन्द, सनौर, नाभा, महिला समाज कैथल बड़ी संख्या में आर्यजन उपस्थित हुए। इस कार्यक्रम में प्रि. विवेक तिवारी जी सपरिवार पधारे तथा परिवार सहित यजमान बने।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **फर्स्ट इम्प्रैशन कार्पोरेट सर्विसिज, (प्रा.) लि.,** ई.113–114, सैक्टर–63, नोएडा, उ.प्र.–201301 (दूरभाष : 120–4246315) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**